# श्रद्धांजली से तर्पण तक

# श्रद्धांजली से तर्पण तक

● प्रियंका श्रीवास्तव 'शुभ्र'

समदर्शी प्रकाशन
नव-सृजन के नवीन पृष्ठ...

3049, हुड्डा सैक्टर-13, भिवानी, हरियाणा-127021

इस पुस्तक का कोई भी अंश, कहीं पर भी, बिना लेखक
की अनुमति के उद्धृत नहीं किया जाना चाहिए।

ISBN : 978-93-88049-49-8

सर्वाधिकार © : प्रियंका श्रीवास्तव 'शुभ्र'
305, Indralok Apartment,
New Patliputra colony,
Patna-800013

मूल्य : ₹150/-

प्रथम संस्करण : मई, 2019

प्रकाशक : समदर्शी प्रकाशन,
3049, हुड्डा सैक्टर-13,
भिवानी, हरियाणा-127021
मोबाइल नंः 9599323508
Website: www.samdarshiprakashan.com
Email: samdarshi.prakashan@gmail.com

आवरण सज्जा : 'समदर्शी'

मुद्रक : थॉमसन प्रेस

---

Shraddhanjali se Tarpan tak written By- priyanka shrivastav shubhr
₹150/-

# समर्पण

मैं अपना प्रथम कहानी संग्रह 'श्रद्धांजली से तर्पण तक' अपनी सासू माँ स्व. श्रीमति सीता देवी को समर्पित करती हूँ।

अम्माजी हम सभी के लिए प्रेरणा की स्रोत हैं। अल्पशिक्षित होते हुए भी उन्होंने अपने सभी बच्चों को अच्छी शिक्षा दी। आज हम महसूस करते हैं कि उन्होंने हम बहुओं को भी बहुत कुछ सिखाया। सबसे बड़ी चीज़ हर परिवेश में सम्मान के साथ रहना सिखाया। ग्रामीण और शहरी परिवेश दोनों भिन्न होते हैं। बात-बात में ही दोनों की बारीकियों को समझाया। कहाँ विनम्र होना है और कहाँ सर ऊँचा करके रहना है ये सिखाया। मैं उन्हें नमन करती हूँ और अपनी पुस्तक उन्हें समर्पित करके गौर्वान्वित महसूस कर रही हूँ।

**– प्रियंका श्रीवास्तव 'शुभ्र'**

# अनुक्रम


| | |
|---|---|
| समर्पण | 5 |
| दो शब्द | 9 |
| श्रद्धांजली | 11 |
| परिमार्जन | 20 |
| वसीयतनामा | 32 |
| एक पिन चुभा | 38 |
| अपेक्षा | 51 |
| एहसास | 59 |
| सैंडविच | 71 |
| प्यार के दो पल | 81 |
| एक थप्पड़ | 87 |
| बेरुटीन ज़िन्दगी | 94 |
| रोड - मेट | 100 |
| तर्पण | 108 |

# दो शब्द

कहानी और कविताएँ हमारे साथ-साथ हमारे इर्द-गिर्द भ्रमण करती हैं। जब कभी हम थोड़ा भावुक हो कर दो क्षण विश्राम कर अपने अगल-बगल देखते हैं तो एक कहानी का जन्म हो जाता है और जब हम उसे गुनगुनाने लगते हैं तो कविता व ग़ज़ल  आ खड़ी होती है।

कहानियाँ हमारे समाज में से ही निकल कर हमारे समक्ष आती हैं। मेरी यह पुस्तक एक दर्जन कहानियों का संकलन है। इसकी सभी कहानियों को पढ़ कर ऐसा लगेगा कि ये हमारे आस-पास घटित घटना का ही तो वर्णन है।

इसकी कुछ कहानियाँ तो ऐसी हैं जिसे लिखते वक्त मैं रो पड़ी। मात्र लिखते वक्त नहीं जितनी बार पुनरावलोकन किया उतनी ही बार मेरी आंखें डबड़बाई। हर पात्र की तक़लीफ मुझे अपनी ही लगती थी, क्योंकि सारी घटनाओं का ताना बाना हमारे इर्द-गिर्द ही बनता है।

मैंने ग्राम्य जीवन को बहुत नज़दीक से देखा। कुछ पुरानी घटनाएँ बुजुर्गों से सुनी। नारी के जीवन की त्रासदी तो हर युग में ही रही। आज भी नारी सामाजिक तक़लीफों से मुक्त नहीं। सभी बातें उमड़-घुमड़ कर मेरी लेखनी से बह निकली।

कहानी लिखने का उद्देश्य मात्र घटनाओं का वर्णन करना नहीं है। इन घटनाओं

से हमें सीख ले कर जीवन में सुधार लाने का प्रयास करना है। नारी चाहे बेटी हो या बहू, बहन हो या पत्नी, माँ हो या सास हर रूप में पहले वो नारी है। जिसके पास सृष्टी रचने की अद्‌भुत क्षमता है। फिर भी वो तिरस्कृत जीवन जीती है। आख़िर क्यों?

हमें मिल कर इसका जवाब ढूँढ़ना है।

तो आइए एक बार बड़े ध्यान से इस पुस्तक की हर कहानी को पढ़ें।

धन्यवाद।

**– प्रियंका श्रीवास्तव 'शुभ्र'**

# श्रद्धांजली

आज चाची की बरसी है, पर घर में ये कोहराम कैसा? ये डायरी की क्या चर्चा हो रही है? डायरी में ऐसी क्या बात थी जो बड़े भैया ने इसे छुपा लिया? नैनसी इतनी छोटी है वो क्यों भैया से उलझ कर सबका मन ख़राब कर रही है?

अच्छा....ये नन्दी बुआ की चाल है। घर की शांति भंग करने में तो इन्हें महारत हासिल है। चाची की डायरी जिसके विषय में किसी को कुछ ज्ञात नहीं था उसका राज नन्दी बुआ को कैसे पता चला?

खैर छोड़ो बुआ का राज...। देखूँ तो सही डायरी में भाभी ने आख़िर क्या लिखा है। ओफ्फ...! ये नन्दी बुआ कुछ का कुछ बना सकती हैं। चाची ने अपनी डायरी के माध्यम से अपने बच्चों को कितनी अच्छी तरह से समझाने की कोशिश की थी कि घर में शांति बनाए रखना कितना आवश्यक है। उन्हें क्या पता था कि इस बार डायरी ही कोहराम का कारण बन जायेगी। उन्होंने अपनी डायरी में एक-एक शब्द को कितनी अच्छी तरह से पिरोया था, जैसे अपने बच्चों को सामने बैठ कर समझा रहीं हों।

''बच्चों! आज मेरी स्थिति जल विहीन तड़पती उस मछली के समान है, जो तड़प तो रही है पर प्राण नहीं तज पा रही। मेरे प्यारे बच्चों! मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ, भाई-बहन का झगड़ा बचपन तक ही अच्छा लगता है। उम्र के बढ़ते सोपान पर नोक-झोंक, हँसी- मज़ाक तक ही आनन्ददायी होती है, पर जब नोक-झोंक, हँसी-मजाक से आगे बढ़ कर विकराल रूप लेने लगे तो समझदारी इसी में है कि मौन होकर सभा भंग कर दी जाए। दूसरे कार्य में व्यस्त होकर मन को शांत कर प्रारम्भिक अवस्था में आने का प्रयास किया जाए। एक पुरानी कहावत है- 'काठ छिलने से

चिकना होता है और बात छिलने से रुखी।' जब ये पता है तो फिर बात को छीलना ही क्यों? भाई-बहन के प्यार की जितनी कहानी है उससे ज्यादा तकरार कि मिसाल हैं।

अपनी बात ऊपर करना हर कोई चाहता है, पर ये क्यों नहीं समझता कि बात ऊपर या नीचे होने से कोई बड़ा या छोटा नहीं हो जाता। भगवान ने जिसे जन्म से बड़ा बनाया है वही बड़ा रहेगा। बात में शांति लाकर बड़ों का सम्मान कर के छोटों में भी बड़प्पन आ सकता है। यही बात मैं बड़े से भी कहती हूँ, केवल बड़े होने से कुछ नहीं होता। बड़े को भी अपना बड़प्पन छोटों के साथ प्यार का व्यवहार कर के, उसकी गलतियों को माफ कर के सिद्ध करना होता है। केवल उम्र में बड़े होने से कुछ नहीं होता। जब बड़े अपना बड़प्पन नहीं निभाते तो छोटे अकसर उनका आदर करना छोड़ देते हैं, जिससे प्यार के बीच एक खाई उत्पन्न हो जाती है।

तुम सभी भाई-बहन लड़ कर अलग हो जाते हो, झट-पट एक दूसरे का मुँह नहीं देखने का वादा कर लेते हो और अपने-अपने कामों में व्यस्त हो जाते हो। अपने कामों में व्यस्त होकर तुम तो अपने को उलझा लेते हो, पर घर का वातावरण कितना बोझिल हो जाता है, ये तुम महसूस नहीं करते, या कर के भी करना नहीं चाहते। इसका असर मुझपर बहुत ज्यादा पड़ता है। मैंने कितनी बार तुम लोगों को कहा है कि घर को युद्ध क्षेत्र मत बनाओ, मैं घबड़ा जाती हूँ, अन्दर से टूट जाती हूँ। तुम लोग अपने आप को तुरत शांत कर लेते हो पर मुझे अपने आप को शांत करने में बहुत वक्त लगता है।

मित्तल बेटा! तुम भैया से छोटे हो तुम्हें भैया की बात माननी चाहिए। पर तुम सोचते हो छोटे हो कर भी तुम बड़े हो क्योंकि तुम सदा सच बोलते हो, जो करते हो सही करते हो इसलिए तुम जो कहो सभी उसे तुरंत मान लें। तुम्हारे मुख से प्रश्न निकले और सामने वाला जी सर कहते हुए खड़ा हो जाए ज़वाब के साथ, और वो भी तुम जो चाहते हो उसके साथ। बेटा शांत मन से सोचो ये क्या सही अर्थ में सम्भव है।

मैं तो तुम्हारी माँ हूँ, क्या मेरी हर बात तुम बिना कोई प्रश्न किए मान लेते हो? जब तुम माँ-पिताजी की बातों पर प्रश्न करते हो तो तुम कैसे सोच सकते हो कोई तुम्हारी बातों को तुरत मान ले? किसी की बातों पर प्रश्न करना उसका निरादर नहीं है, ये जिज्ञासा है और कभी-कभी, हँसी-मजाक। तुम्हारे मन में क्या विचार घुमड़ रहा है ये तो कोई नहीं जानता, इसलिए वो तुमसे प्रश्न करता है और तुम नाराज़ हो जाते हो। तुम्हें लगता है तुम छोटे हो इसलिए लोग तुम्हें दबाते हैं, पर ऐसी कोई बात नहीं है।

तुम्हारे मन की बात नहीं होने पर तुम चीखना-चिल्लाना शुरू कर देते हो। लोग तुम्हारे सामने चुप हो जाते हैं तो तुम समझते हो कि तुम सही थे, इसलिए लोग चुप हो गए, पर ऐसा नहीं है। लोग तुम्हारी इज्जत में चुप नहीं होते लोग अपनी इज्जत, परिवार की इज्जत और तुम्हारे प्यार में चुप हो जाते हैं। चीखने-चिल्लाने से कहीं तुम्हारी तबियत ना ख़राब हो जाए ये सोच कर लोग चुप हो जाते हैं। पर तुम सोचते हो तुमने डाँट-डपट कर सबको चुप कर दिया। एक बात जानते हो मूर्ख ही ज्यादा बोलता है या अपना ज्यादा मान दिखाता है।

तुम लोगों को मैंने चन्दर की कहानी बहुत बार सुनाई है, हर बार तुम लोग कहानी समझ कर केवल हँस लेते। यदि कभी भी उसकी कहानी पर गौर करते तो समझते कि चन्दर वास्तव में मूर्ख था, जिस कारण वह परेशानी में पड़ता। मैं चन्दर को बहुत अच्छी तरह जानती थी। अपनी अक्लमंदी सिद्ध करने की कोशिश में वह हमेशा नयी गलती करता और परेशानी में पड़ता साथ ही हास्य का कारण भी बनता।

एक बार की बात है वह बाजार से खट्टा आम ले आया, तो माँ ने उसे चख कर लाने को कहा। दूसरे दिन उसने ओल चख लिया। दुकानदार ने उसे लाख समझाया पर उसने नहीं माना। फलस्वरूप पूरा मुँह सूज गया। कितनी सूई, दवाईयाँ कराई गई तब जाकर उसे आराम हुआ।

एक दिन इमली वाले ने इमली का दाम कम नहीं किया तो गुस्से में वह इमली के पेड़ पर चढ़ गया और इमली तोड़ने लगा। एक वृद्ध सज्जन उधर से जा रहे थे तो उन्होंने कहा बेटा पतली डाल पर मत जाओ वरना गिर जाओगे। उसे गुस्सा आ गया बुढउ मुझे श्राप देता है, मैं अभी मज़ा चखाता हूँ। वह इमली तोड़-तोड़ कर उस वृद्ध सज्जन को मारने लगा। वे तो चुप-चाप चले गए पर आस-पास के लोग इमली चुनने लगे जिसमें वह इमली वाला भी था। उसे देखकर उसे फिर गुस्सा आ गया। वह ऊपर से ही उसे गालियाँ देने लगा और उतर कर मारने की बात करने लगा। इमली वाला झट से अपनी टोकरी लेकर भागने लगा। वह कहीं दूर न चला जाए ऐसा सोच कर चन्दर पेड़ की ऊँची डाली से कूद गया। बेचारे की टांग टूट गई।

सभी तो वहाँ से भाग खड़े हुए। वही इमली वाला उसे रिक्शे पर किसी तरह बैठा कर अस्पताल तक ले गया। पूरे डेढ़ महीना अर्थात् जितने दिन उसके पाँव पर प्लास्टर रहा वह इमली वाले को कोसता रहा। पहले गिराता है फिर अस्पताल पहुँचाकर नाम कमाता है। अरे, पहले ही दाम कम कर देता तो मैं पेड़ पर चढ़ता ही क्यों? अपने आप तो भला आदमी बन गया मुझे नरक की ज़िन्दगी दे दी। अपनी गलती उसे अन्त तक समझ में नहीं आई। मैं ये बताना चाहती हूँ कि गुस्से में लिये

गये निर्णय ज्यादातर ग़लत ही परिणाम देते हैं।

बच्चों! छोटी-छोटी बातों में हार-जीत नहीं होती। खेलों में भी हार-जीत तभी तक सही है जब-तक खेल, खेल भावना से खेला जाए। यदि उस हार-जीत को अपने मान-सम्मान से जोड़ दिया जाए तो खेल जैसी अच्छी चीज़ भी युद्ध का आह्वान करेगी।

आज मैं अपने बड़े बेटे और बेटी से पूछती हूँ- क्या छोटे को चिढ़ाकर उसे चिड़-चिड़ा बनाने में तुमलोग अपना पूरा सहयोग नहीं प्रदान कर रहे।

वर्मा अंकल के यहाँ क्या हुआ था। बड़े दोनों भाईयों ने अपनी छोटी बहन से राखी बंधवा कर उसे अठन्नी पकड़ा दी जबकि नन्हीं गुड़िया को पता था कि पापा ने भैया को गुड़िया लाने के लिए रुपये दिए हैं। वह गुड़िया के लिए मचलने लगी और दोनों भाई उसे चिढ़ाने लगे। गुस्से मे आकर नन्हीं अठन्नी फेंक कर रूठ गई। दोनों भाई चालाकी से अठन्नी उसके फ्रॉक के पॉकेट मे डाल देते और नन्हीं बार-बार फेंक देती। वो बिल्कुल चिड़-चिड़ी होगई थी। फिर बड़े ने छोटे को डाँटते हुए नन्हीं प्यारी बहन को अपने पास बुलाया और बड़े प्यार से पूछा- ''तुम्हें कितने रुपये चाहिए, जबकि वह जानता था कि उसके लिए गुड़िया आ चुकी है। नन्हीं खुश हो गई और चिल्लाने लगी मुझे रुपये नहीं गुड़िया चाहिए। छोटे ने कुर्सी पर चढ़ कर झट गुड़िया आलमारी के ऊपर रख दी और कहा जाओ ले लो। नन्हीं, गुड़िया लेने के लिए हाथ में छड़ी लेकर कुर्सी पर चढ़ने लगी। दोनों भाई उसकी कारस्तानी का मज़ा ले रहे थे। उसी समय संतुलन बिगड़ गया और नन्हीं नीचे गिर गई। उसका होठ कट गया और आगे का एक दांत टूट गया जो अभी-अभी दूध के दांत टूटने के बाद आया था।

होठ पर स्टिच का निशान और आगे का एक दांत गायब, अब ज़िन्दगी भर नन्हीं के साथ-साथ उसके भाईयों को भी राखी के गिफ्ट की याद दिलाती रहेगी।

छोटे को इतना क्यों चिढ़ाना कि उसे कोई चीज़ पाने की इच्छा इतनी बलवती हो जाए कि उसे भला-बुरा सोचने की बुद्धी खत्म हो जाए। बड़ों में ये गुण हमेशा होने चाहिए कि वह अपने छोटे को सम्भाल सके। हर बात किताबी ज्ञान से नहीं सीखी जाती, कुछ बातें मनुष्य परिस्थितियों से भी सीखता है, कुछ प्यार के वशीभूत होकर और कुछ अपने बड़ों से।

सिर्फ माँ वो इंसान है जो एक तरफा प्यार करती है। भगवान ने माँ के सिवा कोई दूसरा नहीं बनाया जो एक तरफा प्यार कर सके। पशु-पक्षी की माँ भी अपने बच्चों को बहुत प्यार करती है। बच्चों की सुरक्षा में अकसर उन्हें अपनी जान गँवानी पड़ती

है फिर भी बच्चों की सुरक्षा में वे दीवार बन खड़ी रहतीं हैं, यद्यपि वे जानतीं हैं कि उनके बच्चे लौट कर उनके पास नहीं आएँगे।

माँ और बच्चे के बीच सिर्फ माँ बच्चा और उसका ममत्व होता है। मेरी प्यारी बेटी तुम एक दिन माँ के इस भाव को समझ पाओगी पर मेरे बेटे सिर्फ इसे मेरे आँसुओं से समझ पाएं तो ठीक है, नहीं तो मैं कुछ नहीं कर सकती।

उनके लिए मैं इतना परेशान इसलिए हूँ क्योंकि ये सिर्फ आज की बात नहीं है। कल तुम बड़े हो जाओगे तो तुम्हारा भी अपना परिवार होगा। यदि तुम्हारा यही रवैया रहा तो परिस्थिति कैसे सम्भालोगे? जिसे सही और ग़लत का ज्ञान ही नहीं वो दूसरों को क्या सही और ग़लत बताएगा। तब तो मैं तुम्हारे पास नहीं रहूँगी तुम्हारे गलत फैसले को सही करने के लिए और यदि रह भी गई तो क्या अच्छा लगेगा तुम्हारे बच्चों के सामने मैं तुम्हें गलत सिद्ध करूँ।

यह बात तुम लोग ऐसे नहीं समझोगे। एक बार माँ के बारे में सोचो तो बहुत कुछ समझ पाओगे। माँ वो इंसान है जो जन्म से पहले से ही तुम्हारी लात को सहती है, पर इसका अर्थ ये नहीं कि तुम उसे दिन-रात लात मारो। जब माँ बच्चे को अपनी कोख में रखती है उस वक्त उसका लात मारना माँ को गुदगुदाता है, वह हँसती है और प्रसन्न होती है क्योंकि उस वक्त बच्चा निःकलंकित होता है। उसके लात मारने में कोई भावना नहीं रहती। गुस्सा और तिरस्कार नहीं होता साथ ही तब माँ में भी सहन शक्ति रहती है। छोटे-छोटे आघात को वह सह सकती है।

जन्म के बाद माँ बच्चे को अपने पेट पर खड़ा करती है बच्चा माँ का हाथ पकड़ कर उसके पेट को अपने पैरों से रौंदता है, पर माँ को तक़लीफ नहीं होती माँ खुश होती है, क्योंकि उसमें माँ और बच्चे दोनों को अच्छा लगता है, प्यार मिलता है। बच्चे के उस प्यार के भार को माँ सह सके इतनी शक्ति भी उसके पास होती है। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है माँ की उम्र भी बढ़ती है। समय के साथ माँ उम्र के उस सोपान पर पहुँच जाती है जहाँ शरीर का लचीलापन कम होने लगता है। शरीर के साथ-साथ मन का लचीलापन भी कम होने लगता है। ऐसे समय पर जब माँ आहत होती है तो उसे सम्भालना कठिन हो जाता है।


## पूरी पुस्तक पढ़ने के लिए अभी ऑर्डर करें

## पेपर बैक - 150 रुपये

## ईबुक- 50 रुपये